Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में हिंदी ललित निबंधों की प्रासंगिकता

डॉ. सरयू शर्मा

सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: * डॉ. सरयू शर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20741515

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में हिंदी ललित निबंधों की शैक्षिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक प्रासंगिकता की विवेचना करता है। NEP 2020 ने मातृभाषा में शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वयन, समग्र विकास, और बहुविशे शिक्षा को प्रोत्साहित किया है। हिंदी ललित निबंध — बालकृष्ण भट्ट, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय आदि निबंधकारों की रचनाएँ — नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों के साथ सार्थक संवाद स्थापित करती हैं। यह शोधपत्र सिद्ध करता है कि ललित निबंध केवल साहित्यिक विधा नहीं है, अपितु आधुनिक शिक्षा के लिए एक सशक्त शैक्षिक उपकरण भी है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-05-2026
- **Accepted:** 13-06-2026
- **Published:** 18-06-2026
- **IJCRM:**4(6); 2026: 160-163
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. सरयू शर्मा. नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में हिंदी ललित निबंधों की प्रासंगिकता. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(6):160-163.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: ललित निबंध, NEP 2020, हिंदी साहित्य, मातृभाषा शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, समग्र विकास।

© 2026 डॉ. सरयू शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

Student भारतीय शिक्षा में 29 जुलाई 2020 को घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) स्वातंत्र्योत्तर भारत की तृतीय शिक्षा नीति है। कस्तूरीरंगन समिति द्वारा निर्मित और केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित इस नीति ने शिक्षा की संरचना, भाषा-नीति, पाठ्यक्रम, और मूल्यांकन प्रणाली में व्यापक परिवर्तन किए। इस नीति का मुख्य उद्देश्य 21वीं शताब्दी की आवश्यकताओं के अनुरूप एक समग्र, समावेशी, गुणवत्तापरक और लचीली शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है।

हिंदी साहित्य में ललित निबंध एक विशिष्ट, संवेदनशील और बौद्धिक विधा है। इसमें विचार की अपेक्षा भावना प्रधान होती है, विषय गौण होता है और शैली का चारुत्व प्रधान। यह विधा निबंधकार की स्वाधीन चिंतन की उपज है जिसमें बुद्धि की अपेक्षा हृदय को स्पर्श करने की क्षमता अधिक होती है। उन्नीसवीं शताब्दी से चली आ रही इस विधा में भारतीय संस्कृति, लोकजीवन, भाषा और मानवीय मूल्यों की गहरी अभिव्यक्ति हुई है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य NEP 2020 के उद्देश्यों और हिंदी ललित निबंधों की मूलभूत विशेषताओं के बीच संयोजन के बिंदुओं को रेखांकित करना है। साथ ही यह भी विचार किया जाएगा कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में ललित निबंध किस प्रकार सहायक भूमिका निभा सकते हैं।

2. ललित निबंध: स्वरूप और विशेषताएँ

2.1 ललित निबंध का अर्थ और परिभाषा

ललित निबंध निबंध की वह विशेष शैली है जिसमें निबंधकार व्यक्तिगत अनुभव, भावना, स्मृति, कल्पना और मनन के माध्यम से साहित्यिक और सांस्कृतिक जगत का स्वच्छंद संचरण करता है। विद्वानों ने इसे व्यक्तिमूलक, आत्मपरक, व्यंजनात्मक, संवेदनात्मक एवं दार्शनिक निबंध कहा है। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, नए युग के निबंध तर्कमूलक से अधिक व्यक्तिगत होते हैं और व्यक्ति की स्वाधीन चिंतन की उपज होते हैं।

2.2 प्रमुख ललित निबंधकार और उनका योगदान

हिंदी ललित निबंध की परंपरा में निम्नलिखित निबंधकारों ने अमूल्य योगदान दिया है:

- **हज़ारी प्रसाद द्विवेदी** — 'नख़ून क्यों बढ़ते हैं', 'कुटज', 'आलोक पर्व' — आधुनिक हिंदी ललित निबंध के जनक माने जाते हैं। उनके निबंधों में भारतीय परंपरा, संस्कृत ज्ञान, लोकजीवन और आधुनिक जीवन का अद्‌भुत समन्वय है।
- **विद्यानिवास मिश्र** — 'तमाल के झरोखे से', 'शेफाली झर रही है', 'रथयात्रा' — उन्होंने साधारण विषयों को पौराणिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक संदर्भों से युक्त करके प्रभावशाली बनाया।
- **कुबेरनाथ राय** — 'गंध मादन', 'प्रिय नीलकंठी', 'रस आखेटक' — भारतीय ग्रामीण जीवन, लोक संस्कृति और दर्शन की त्रिवेणी उनके निबंधों में सहज रूप से प्रवाहित है।
- **विवेकी राय और रामवृक्ष बेनीपुरी** — जिन्होंने ग्रामीण जीवन, भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक बोध को साहित्यिक अभिव्यक्ति दी।
- **बालकृष्ण भट्ट और गुलाब राय** — हिंदी गद्य की सबल निबंध परंपरा को आगे ले जाने वाले आरंभिक निबंधकार।

2.3 ललित निबंध की मुख्य विशेषताएँ

ललित निबंध की निम्नलिखित विशेषताएँ इसे अन्य निबंध शैलियों से अलग करती हैं:

- **आत्मपरकता**: लेखक का व्यक्तित्व निबंध में सहज रूप से उभर आता है।
- **भावनाप्रधानता**: तर्क से अधिक अनुभूति को महत्व दिया जाता है।
- **शैली की लालित्य**: भाषा का सेंद्रिय, चित्रात्मक और संगीतात्मक प्रयोग।
- **संस्कृति बोध**: लोकजीवन, परंपरा, पौराणिकता और आधुनिकता का समन्वय।
- **विषय वैविध्य**: प्रकृति, जीवनदर्शन, रीति-रिवाज, स्मृति, कला और साहित्य — सभी विषय इसमें सम्मिलित होते हैं।

3. नई शिक्षा नीति 2020: मुख्य उद्देश्य और संरचना

3.1 NEP 2020 की मुख्य विशेषताएँ

NEP 2020 ने 10+2 सिस्टम को 5+3+3+4 संरचना से प्रतिस्थापित किया है, जिसमें 12 वर्ष की विद्यालयी शिक्षा और 3 वर्ष की प्री-स्कूलिंग शामिल है। इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं:

- **मातृभाषा में शिक्षा**: प्राथमिक स्तर (5वीं कक्षा तक, आदर्शतः 8वीं तक) मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहन।
- **समग्र विकास**: विद्यार्थियों का बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास का उद्देश्य।
- **बहुविशे शिक्षा**: विज्ञान, कला, मानविकी और भाषा साहित्य को एक साथ सीखने की सुविधा।
- **भारतीय ज्ञान परंपरा** (IKS): पाठ्यक्रम में भारतीय नालेदा-तक्षशिला ज्ञान का समावेश।
- **कौशल विकास**: पुस्तकीय ज्ञान के साथ व्यावहारिक और कौशल-आधारित शिक्षा पर ध्यान।

3.2 NEP 2020 और साहित्य-कला का संहनन

NEP 2020 स्पष्ट रूप से कहती है कि प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान में भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शन, कला, नृत्य, नाट्य, गणित, विज्ञान आदि विषयों के विभाग स्थापित किए जाएँ और सुदृढ़ किए जाएँ। इससे स्पष्ट होता है कि नीति निर्माता साहित्य और कला को शिक्षा के केंद्रिय तत्व के रूप में स्वीकार करते हैं। तक्षशिला और नालेन्दा जैसे प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों की संबहुविशे शिक्षा की परंपरा की ओर वापसी का आह्वान NEP 2020 की आत्मा में है।

4. नई शिक्षा नीति और हिंदी ललित निबंध: संयोजन के बिंदु

4.1 मातृभाषा शिक्षा और हिंदी ललित निबंध

NEP 2020 का सबसे महत्वपूर्ण दिशानिर्देश है — प्राथमिक स्तर तक मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा। हिंदी ललित निबंध हिंदी की स्वाभाविक और संवेदनशील अभिव्यक्ति का साहित्यिक रूप है। जब

© 2026 डॉ. सरयू शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बच्चे अपनी भाषा में सीखते हैं तो वे ज्ञान को अधिक गहराई से ग्रहण कर सकते हैं। हिंदी ललित निबंध भाषा की स़क्ति और लालित्य को युवा पाठकों तक संचारित करने का सशक्त माध्यम है।

4.2 समग्र विकास और ललित निबंध

NEP 2020 विद्यार्थियों के समग्र विकास — बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक — की अवधारणा को सामने रखती है। हिंदी ललित निबंध इसी समग्रता को साजार करते हैं:

- हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का 'नख़ून क्यों बढ़ते हैं' निबंध मानवीय प्रवृत्ति, जिज्ञासा, बौद्धिक चिंतन और नैतिक जागरण का संदेश देता है।
- विद्यानिवास मिश्र के निबंध लोक संस्कृति, ईद-त्यौहारों और फसलों के संदर्भ में भावनात्मक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक जीवतता जगाते हैं।
- कुबेरनाथ राय का 'गंध मादन' रचनात्मक और दार्शनिक चिंतन का समन्वय है जो विद्यार्थियों को बौद्धिक स्तर पर सोचने के लिए प्रेरित करता है।

4.3 भारतीय ज्ञान परंपरा और ललित निबंध

NEP 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को शिक्षा में समेकित करने की शिद्दत से वकालत करती है। हिंदी ललित निबंध वास्तव में इस परंपरा का बोलता दर्पण है। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी अपने 'कुटज' निबंध में आयुर्वेद, योग, धर्म, परंपरागत संस्कृति और आधुनिक जीवन का अद्भुत समन्वय करते हैं। इसी तरह विद्यानिवास मिश्र के निबंध भारतीय लोकजीवन और सांस्कृतिक अनुभवों की संविधा हैं।

4.4 नैतिक और मानवीय मूल्यों का संवर्धन

NEP 2020 नैतिक और मानवीय मूल्यों की शिक्षा को आवश्यक मानती है। ललित निबंधों में मानवीय संवेदनशीलता, सहजीविता, करुणा, स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी के संदेश स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होते हैं। यह विधा विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि, सहानुभूति और नैतिक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक होती है।

4.5 रचनात्मक आलोचना और विमर्श की क्षमता

ललित निबंध विद्यार्थियों की रचनात्मक आलोचना की क्षमता विकसित करता है। NEP 2020 संचार, विमर्श, शोध और अंतर्विषयी चिंतन को बढ़ावा देना चाहती है। ललित निबंध में विचार, भावना और कल्पना की त्रिवेणी सहजता से बहती है जो विद्यार्थियों को नय़े सोचने और अभिव्यक्त होने की प्रेरणा देती है।

5. शिक्षा में ललित निबंध की संभावित भूमिकाएँ

5.1 पाठ्यक्रम निर्माण में सहायकता

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत भाषा और साहित्य विशेषज्ञता के विकास के लिए हिंदी विभागों को सशक्त किया जाना जरूरी है। ललित निबंध सरल, अनूठे विषयों और सौंदर्यपरक शैली से सीखने को उत्साहित करते हैं, जो विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति रुचि और संवेदनशीलता उत्पन्न करता है।

5.2 शिक्षक प्रशिक्षण में उपयोगिता

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों (बी.Ed., D.El.Ed.) में हिंदी ललित निबंध को सामग्री के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षक जो हिंदी ललित निबंधों से परिचित होते हैं, वे विद्यार्थियों में स़क्ति, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक जीवंतता का संचार करने में समर्थ होते हैं।

5.3 उच्च शिक्षा में बहुविशे विद्याक्रमों में सहभागिता

NEP 2020 के अनुसार IIT, NIT और अन्य तकनीकी संस्थानों में भी मानविकी विषयों का अध्ययन आवश्यक होगा। इस संदर्भ में हिंदी ललित निबंध विज्ञान और प्रौद्योगिकी के छात्रों को मानवीय संवेदनशीलता, स़क्ति और सांस्कृतिक बोध से जोड़ने का अवसर देता है।

5.4 डिजिटल माध्यम और ललित निबंध कोश

21वीं शताब्दी की डिजिटल आवश्यकताओं के अनुरूप, हिंदी ललित निबंधों को डिजिटल रूप में संरक्षित और सुलभ बनाया जाना जरूरी है। e-Content, Podcast, और ओडियोबुक के माध्यम से विद्यार्थियों तक इन निबंधों की पहुँच आसान होगी। SWAYAM, DIKSHA, e-Pathshala जैसे सरकारी मंचों पर हिंदी ललित निबंधों की संमिलितता NEP 2020 के दिशानिर्देशों के अनुरूप होगी।

6. चुनौतियाँ और संभावनाएँ

6.1 ललित निबंध के समक्ष चुनौतियाँ

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में साहित्यिक विधाओं की उपेक्षा का माहौल।
- वैश्विक भाषाओं (अंग्रेज़ी) के कारण हिंदी साहित्य के प्रति घटती रुचि।
- डिजिटलीकरण के दौर में सॉशियल मीडिया की डिजिटल संस्कृति से स्पर्धा।
- ललित निबंधों के दर्शन को नई पीढ़ी तक संप्रेषित करने की चुनौती।

6.2 संभावनाएँ

- नई शिक्षा नीति के अंतर्गत हिंदी विभागों को सशक्तिकरण की संभावना।
- ललित निबंधों की नई विधाएँ — डिजिटल ललित निबंध, यात्रा-वृत्तांत और विचारमंच विधा की संभावना।
- भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को निबंधों के माध्यम से आधुनिक शिक्षा से जोड़ने का अवसर।
- आनंदमय शिक्षा (Joyful Learning) के लिए ललित निबंधों का उपयोग।
- UGC और NCERT द्वारा हिंदी ललित निबंधों को आधुनिक संदर्भ में सम्मिलित करने की संभावना।

7. निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक नई इबारत है। इसने साहित्य, कला, संस्कृति, मातृभाषा और भारतीय ज्ञान परंपरा

© 2026 डॉ. सरयू शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

को शिक्षा का अभिन्न अंग माना है। हिंदी ललित निबंध इस दृष्टि से NEP 2020 के साथ गहरा संवाद स्थापित करता है।

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय आदि निबंधकारों की रचनाएँ पाठ्यक्रम में समाविष्ट होनी चाहिएं, न केवल हिंदी साहित्य विशेषज्ञता के लिए, अपितु समग्र मानवीय विकास और सांस्कृतिक रहन-सहन के लिए भी। इस संदर्भ में यह शोधपत्र नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और हिंदी साहित्यकारों को एकजुट होकर इस दिशा में कार्य करने का आह्वान देता है।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि हिंदी ललित निबंध केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा के लिए एक जीवंत स्रोत है। NEP 2020 और हिंदी ललित निबंध के संयोजन से शिक्षा में गहराई, सौंदर्य और मानवीय संवेदनशीलता आएगी।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. द्विवेदी हज़ारी प्रसाद. अशोक के फूल. वाराणसी: हिंदी पुस्तक भंडार; 1952.
2. द्विवेदी हज़ारी प्रसाद. विचार और वितर्क. इलाहाबाद: ताज प्रकाशन; 1953.
3. द्विवेदी हज़ारी प्रसाद. कुटज. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 1957.
4. मिश्र विद्यानिवास. तमाल के झरोखे से. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन; 1981.
5. राय कुबेरनाथ. गंध मादन. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 1965.
6. राय विवेकी. गाँव की इयता. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 1995.
7. सात्येंद्र. निबंध निलय. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन; 2005.
8. शुक्ल रामचंद्र. चिंतामणि. भाग 1. प्रयाग: हिंदी परिषद; 1940.
9. वर्मा रामविलास. हिंदी जातियाँ. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 1977.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author

डॉ. सरयू शर्मा हिंदी विभाग में सह-प्राध्यापक के रूप में सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी, हरियाणा में कार्यरत हैं। हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्यापन, शोध और अकादमिक लेखन में उनकी विशेष रुचि है। उनके शोध क्षेत्र में हिंदी गद्य, आलोचना, भारतीय साहित्य, भाषा अध्ययन तथा समकालीन साहित्यिक विमर्श प्रमुख हैं। उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सक्रिय सहभागिता की है तथा विभिन्न शोध पत्रिकाओं में अनेक शोध-पत्र प्रकाशित किए हैं। वे विद्यार्थियों में साहित्यिक एवं शोधपरक दृष्टि के विकास के लिए निरंतर कार्यरत हैं।

© 2026 डॉ. सरयू शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/